International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"वैश्विक समाज में शिक्षक की भूमिका"

डॉ० शहादत हुसैन

सारांश

आज विश्वभर में भविष्य के लिए शिक्षा तथा शिक्षा का अधिकार (Education for Future, Right to Education) के लिए तीव्र गति से प्रयास चल रहे हैं। भविष्य की शिक्षा परम्परागत ढरे से अलग ही होनी चाहिए। भविष्य में नये मूल्यों, नये सिद्धांतों, नई शिक्षण विधियों, नये प्रकार व व्यक्तित्व के शिक्षकों व प्रशासकों की नितान्त आवश्यकता होगी, लेकिन अभी तक भारतीय शिक्षा में भविष्य के लिए शिक्षा के प्रति उतनी गम्भीरता और गहराई से चिन्तन नहीं हुआ है, जितना कि आवश्यकता है। इस संदर्भ में समाज के प्रत्येक वर्ग संस्था बुद्धि जीवी तथा सरकारी शिक्षा नीतियों को बनाने वाले तथा समस्त जन समुदाय को शिक्षक की योग्यता व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही कार्यक्रम का निर्धारण करना चाहिये।

प्रस्तावनाः–

भारत के सुनहरे भविष्य का सपना देखने वाले आदरणीय भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का यह गुलाबी आशावादी स्वप्न था कि भारत 2020 तक एक बहुत शक्तिशाली व पूर्ण विकसित आधुनिक देश बने और विज्ञान व तकनीकी तथा संसार के शीर्ष देशों में सर्वोच्च स्थान पाये। इन स्वप्नों को साकार करने के लिए भारतीय शिक्षा में बहुत से क्रांतिकारी सुधार करने होंगे। भारत के सभी वर्गों में उत्तम शिक्षा की व्यवस्था हो पाये तथा सरकार और शिक्षक वर्गों को बहुत अधिक योगदान देना होगा। केवल आदर्शों की दुहाई देने, नारे लगाने से या गिरी हुई स्थिति को चुपचाप देखते रहने से ऐसा नहीं होगा, बल्कि और शिक्षकों की स्थितियों को सुधारना होगा।

एक शिक्षक ही भावी पीड़ी के भविष्य का निर्माता है तथा प्रभावी व्यक्तित्व व प्रेरणादायक होता है। शिक्षक का मुख्य रूप में सामान्यतः अर्थ देखे तो सिखाने वाला होता है अर्थात् जैसे कोई शिल्पकारी एक बेडोल पत्थर को तराशकर एक सुन्दर मूर्ति का रूप देता है जो किसी नाम से जानी जाती है।

शिक्षकः शाब्दिक अर्थों में:–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक शिक्षक को बालक का चतुमुर्खी विकास करने वाला होना चाहिए। यह कार्य एक शिक्षक तभी कर सकता है, जब स्वयं उसके अन्दर समस्त गुण होंगे। यदि अध्यापक के एक–एक रूप को देखें तो लगता है कि कोई भी पहलू शिक्षक के व्यक्तित्व से परे नहीं होता–

T	=	Talented	=	(प्रतिभावान)
E	=	Elegant	=	(मनोहर व रूचिपूर्ण)
A	=	Ambitious	=	(महत्वाकांक्षी)
C	=	Cheerful	=	(आनन्दित करने वाला)
H	=	Honest	=	(ईमानदार)
E	=	Expensive	=	(बहुमूल्य कीमती)
R	=	Responsible	=	(जिम्मेदारी)

समाज में शिक्षक का स्थान सदैव से एक आदर्श व्यक्ति के रूप में माना गया है। गुरु का महत्व उसके आचरण से सम्बन्धित है। भगवान से भी गुरु का स्थान बड़ा है। सन्त कबीरदास जी ने कहा है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पायँ।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियों बतायें।।

आज भी समाज में शिक्षक एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। यद्यपि आज अर्थ प्रधान युग है, उसी व्यक्ति को लोग विशेष सम्मान देते हैं, जो या तो उच्च पद पर है या धनु कुबेर है।

यही कारण है कि आज अभिभावक अपने बालक को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील या अन्य विभाग में कर्मचारी बनाना पसन्द करते हैं किन्तु अध्यापक बनाना नहीं चाहते।

प्राचीन काल से ज्ञान लेने व देने की परिपाटी चली आई है। उपनिषेद् में कहा गया है– **उतिष्ठत जागृत प्रांप्त बरान्निबोधतः।** अर्थात् **उठो, जागो और श्रेष्ठजनों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो।** शिक्षक के व्यापक अर्थ में वे सभी आ जाते हैं, जिनसे हम कुछ सीखते हैं। 'सभी' शब्द बहुत व्यापक हैं, जिसके अन्तर्गत मनुष्य या मनष्येत्तर प्राणी ही नहीं, जल, थल, आकाश के वे पेड़–पौधे, फूल–पत्ती, मिट्टी–चट्टान, ग्रह–नक्षत्र आदि सभी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आ जाते हैं, जिनसे हमें किसी न किसी प्रकार की सीख मिलती है। पौराणिक आख्यान से विदित होता है कि भगवान दत्तात्रेय ने चौबीस गुरु बनाये थे, जिनमें मनुष्य, पशु–पक्षी एवं वनस्पति आदि सभी शामिल थे। शिक्षक भी दो प्रकार के होते हैं– प्रथम वे जो वेतन भोगी हैं। वेतन लेना उनकी विवशता है, अर्थ प्रधान युग में जीविकोपार्जन के लिए यह आवश्यक है। दूसरे प्रकार के शिक्षक अवैतनिक होते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से ज्ञानदान के पुनीत कार्य में जुटे हुए हैं। पशु–पक्षी एवं वनस्पति मूक भाषा में शिक्षण देते हैं, उनके कार्यकलाप और व्यवहार से हम काफी कुछ सीख सकते हैं। उदाहरणार्थ, **बगुले से एकाग्रता, खरगोश से स्फूर्ति एवं गधे से सहिष्णुता, कोयल से मधुर वाणी का गुण सीख सकते हैं।** अध्यापक का जीवन त्याग और अध्ययनरत् का जीवन होता है, यदि शिक्षक में यह नहीं है तो राष्ट्र एवं समाज के लिए ऐसे शिक्षक भार स्वरूप हैं। शिक्षक के आचरण से ही बालक व समाज कुछ सीखता है। यदि शिक्षक को यह स्वीकार नहीं है, तो उसे अध्यापन का व्यवसाय त्याग देना चाहिए।

नैतिक दायित्व निष्ठा व अध्यापक कर्त्तव्यः–

शैक्षिक प्रक्रिया में अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यापक नवीन पीढ़ी का निर्माता व शिक्षा व्यवस्था की धुरी और विद्यालय का प्राण होता है।

पर्सीनन ने लिखा है– "जैसा अध्यापक होता है वैसा ही विद्यालय होता है।"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षक विद्यालय की आत्मा है। बालक के बहुमुखी विकास, शिक्षक से ही सम्भव है। अध्यापक पर राष्ट्र के प्रति एक बहुत बड़ा नैतिक दायित्व है पर यह सब अनुभव करते हैं, कि स्वतंत्र भारत में उसकी स्थिति ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिसके फलस्वरूप शिक्षकों में असन्तोष हो और वे हीनता की ग्रंथि से जकड़े हुए हों। इसका अधिक उत्तरदायित्व समाज पर है। आज के युग में कोरे आदर्शवाद के नारों से कुछ नहीं होता। लोग अध्यापकों द्वारा प्राचीन काल के गुरुओं का अनुकरण करते रहने की दुहाई देते नहीं थकते। शिक्षक का जीवन सादगी मय अवश्य होना चाहिए, पर यह भी सम्भव नहीं है कि समाज का एक वर्ग विलास मय जीवन व्यतीत करे और अध्यापकों से यह अपेक्षा करे वे साधुमय जीवन व्यतीत करें। विद्यालय समाज का लघु रूप होता है।

आखिर अध्यापक भी समाज का प्राणी है, उस पर भी परिवार का आर्थिक दायित्व है। उसे भी सम्मानपूर्वक जीवन जीने का पूरा अधिकार है, लेकिन ताली एक हाथ से नहीं बजती के निर्माण में अध्यापक का भी उतना ही हाथ है, जितना कि समाज के दूसरे वर्गों का। अध्यापकों को अपने उत्तरदायित्व के प्रति पूरा ध्यान देना होगा। अध्यापकों में भी कमियां हैं, कई अध्यापक ट्यूशनों के चक्कर में पडकर अपनी प्रतिष्ठा खो बैठे। ट्यूशन एक प्रकार से शिक्षा का व्यापार है जिसे शिक्षा जगत में आदर की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है। आज शिक्षा एक व्यवसायिक हो गयी है। आज गुरु–शिष्य की प्राचीन परम्परा समाप्त हो चली है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक दृष्टिकोण प्रमुख हो गया है। विद्यालयों में ट्यूशन परम्परा के व्यर्थ परिणाम भी निकलते हैं। निर्धन छात्र शिक्षा सम्बन्धी अतिरिक्त व्यय नहीं उठा सकते और धनी वर्ग के छात्र

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के अध्यापकों के घर पर ट्यूशन पढ़ाने में समर्थ हैं। इस कारण निर्धन वर्ग के छात्र पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। शिक्षा का यह क्रय–विक्रय देश के लिए उचित नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि आज महर्षि संदपिनी का ऐसा आश्रम तो दिखाई नहीं देता, जहाँ छात्रों से शिक्षा सम्बन्धित शुल्क नहीं लिया जाता हो और सारे छात्र धनी–निर्धन के भेदभाव के बिना कृष्ण और सुदामा की तरह एक स्थान पर बैठकर गुरु से शिक्षा ग्रहण करते हों।

आज युग बदल गया है। प्राचीन मर्यादायें और मूल्य लुप्त हो रहे हैं, क्योंकि आधुनिक बनने के लिए पुरानी बातों और परम्पराओं को तिलांजलि दी जा रही है। स्कूलों में ट्यूशन–परंपरा के और भी अनिष्ट परिणाम हुए है। धनी तथा निर्धन छात्रों में मनो–मालिन्य तो बढ़ता जा रहा है, अध्यापक भी इसका शिकार हुए बिना नहीं रहते। कम संख्या में ट्यूशन पढ़ाने वाले अध्यापक अधिक संख्या में ट्यूशन पढ़ाने वाले अध्यापकों से चिढ़ते हैं, ईर्ष्या करते हैं। कभी–कभी तो दोनों एक–दूसरे के छात्रों से बदला लेते हैं। ट्यूशन प्रणाली का सबसे खेदजनक पहलू तो यह है कि जो छात्र अपने पढ़ने वाले विषयों की ट्यूशन सम्बद्ध अध्यापकों से नहीं करता तो अध्यापक उसके साथ उचित व्यवहार नहीं करता है। वह अध्यापक का कोप भाजन बनता है। ऐसे भी देखने में आया है कि कई अध्यापक पीट–पीट कर छात्रों को ट्यूशन के लिए बाध्य करते हैं। कैसे घिनोना स्वरूप है, ऐसे शिक्षक, शिक्षा जगत के लिए कलंक है। ट्यूशन पढ़ाने वाले शिक्षक छात्र–छात्राओं को स्थानीय परीक्षा में उत्तीर्ण कराने की गारंटी भी देता है। छात्र चाहे कमजोर ही क्यों न हो। इस कारण आर्थिक दृष्टि से असमर्थ छात्रों में अध्यापकों से बदला लेने की भावना उत्पन्न होती है। छात्रों में असन्तोष और अनुशासनहीनता का यह भी एक कारण है।

इस समस्या का एकमात्र हल है– **अध्यापकों के वेतन में पर्याप्त वृद्धि कर उन्हें आर्थिक द्वंद्वि से सम्पन्न बनाना।** समाज व शासन का कर्त्तव्य है कि वह इस पर गम्भीरता से विचार करे। स्कूलों में छात्रों तथा अध्यापकों की संख्या में सही अनुपात निर्धारित करने का भी प्रयत्न होना चाहिए। ताकि अध्यापक सीमित संख्या के छात्रों पर पूरी निगरानी रख सके और संस्था में अनुशासन तथा व्यवस्था भी बनी रहे। इसके

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतिरिक्त पढ़ाई में निकम्मे छात्रों को अतिरिक्त समय में पढ़ने की व्यवस्था स्कूलों की ओर से होनी चाहिए, अतिरिक्त समय देने वाले शिक्षक को स्कूल से अतिरिक्त शुल्क देना चाहिए।

कहीं–कहीं आज प्राईमरी विद्यालयों में 70–80 छात्रों को एक शिक्षक ही पढ़ाता है। ऐसे विद्यालय एक अध्यापकीय विद्यालय कहलाते हैं। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अनुसार प्राथमिक स्तर का अनुपात 1 : 40, उच्च प्राथमिक स्तर का 1 : 30 है। एक शिक्षक होने से विद्यार्थियों को वह सभी विषयों की सन्तोषजनक ढंग से पढ़ाई नहीं करा सकता। यह स्थिति के स्तर में गिरावट उत्पन्न करती है। छात्रों के साथ न्याय नहीं हो पाता। प्राईमरी शिक्षक को शिक्षक कार्य के अतिरिक्त पोशाहार की तैयारी, जनगणना, कृषकों को सामग्री बांटना एवं साक्षरता अभियान आदि कार्यों में लगा दिया जाता है। एक व्यक्ति के द्वारा इतने सारे कार्य निर्धारित समय पर परे नहीं किये जा सकते। इनका कार्यों को करने के लिए उसे शिक्षक कार्य के समय को भी देना होगा। शिक्षण कार्य गौण को जाने पर छात्रों के साथ न्याय नहीं हो पाता। इस समस्या का निवारण भी होना चाहिए। शिक्षकों को केवल शिक्षण कार्य पर ही नियत किया जाना चाहिए। हमारी शिक्षा प्रणाली का एक यह भी दोष है कि जिस व्यक्ति की रूचि पढ़ाई में नहीं होती उसे संस्था में प्रवेश मिल जाता है। कक्षाओं में प्रवेश के समय शिक्षार्थी की रूचि का पता लगाने के लिए मनोवैज्ञानिक स्तर पर जाँच–पड़ताल होनी चाहिए। अध्यापन का व्यवसाय भी उसे भी अपनाना चाहिए, जो इसमें रूचि रखता हो। निजी शिक्षण संस्थाओं में कई अधिकारी अपनी–अपनी शिक्षण संस्थाओं के मामलों में सदा हस्तक्षेप करते हैं, जो सर्वथा अनुचित है। इन अधिकारियों में कई ऐसे भी हैं, जिनका शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान शून्य के बराबर है। शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त अव्यवस्था की ओर सरकार समाज सेवियों एवं शिक्षा–शास्त्रियों को ध्यान देना चाहिए। अच्छी शिक्षा ही भारत की नई पीढ़ी का निर्माण करेगी। इसलिए भारत के प्रत्येक बालक को शिक्षा मिल सके, ऐसा प्रयत्न होना चाहिए। बालक का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। अध्यापक को एक आदर्श अध्यापक बनना है। यदि वह अपने कर्त्तव्य को भली–भांति निभायेगा तो समाज व शासन का भी ध्यान उसकी ओर जायेगा ही। राष्ट्र के नव–निर्माण में अध्यापक पर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वास्तव में बहुत बड़ा दायित्व है। रूस व चीन में शिक्षक के पद को बड़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता है। वहां साम्यवादी व्यवस्था होने से समाज में धनकुबेरों का अभाव है।

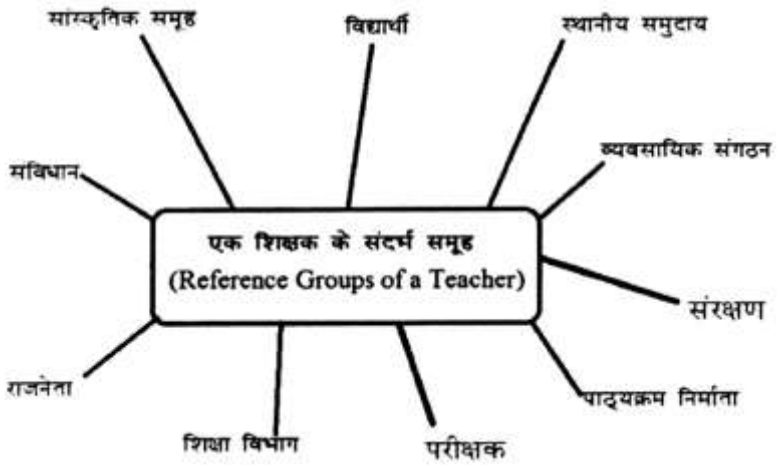

अतः वहां शिक्षक, पत्रकार व तकनीकी विशेषज्ञ को समाज में उच्च समझे जाते हैं। हमारे देश में स्थिति विपरीत है। यहां व्यक्ति का महत्व उसके धन व पद से आका जाता है।

आज शिक्षक के समान की वेतन पाने वाला एक सरकारी कर्मचारी यदि अन्य विभाग में है तो वह भ्रष्ट साधनों से कुछ ही समय में इतना धन एकत्रित कर लेता है कि शिक्षक जीवन पर्यन्त भी कर पाता। असमानता का यह वातावरण समाप्त करना देश के हित में है। प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक को वह सब साधन जुटाने चाहिए जो एक आदर्श व व्यवस्थित विद्यालय के लिए आवश्यक है। सहायक सामग्री, भवन, फर्नीचर, पुस्तकों आदि की पूरी व्यवस्था छोटे–छोटे विद्यालयों में भी होनी चाहिए। ऐसा करने पर ही भारत के ये नन्हें नागरिक भविष्य में जाकर एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। आज विश्वविद्यालय स्तर पर काफी धन का व्यय किया जाता है, लेकिन आरम्भिक स्तर के विद्यालयों पर नहीं। यह स्थिति बदली जानी चाहिए, जिस प्रकार की मजबूती के लिए नींव पक्की होनी चाहिए वैसे ही प्राथमिक शिक्षा देने की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए। राष्ट्र के नवनिर्माण में शिक्षक व समाज दोनों का बराबर उत्तरदायित्व है।

शिक्षक का स्थान सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। शिक्षक ही वह धुरी है जिसके माध्यम से कौशल का हस्तान्तरण होता है और परम्पराओं का निर्वाह होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षक किसी देश की परम्पराओं को आठ सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाता है, उसे अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करता है। **डॉ० राधा कृष्णन ने शिक्षक के सम्मान को उच्च उठाने के लिए शिक्षक राष्ट्र के कल्याण और भविष्य की धरोहर के रक्षक कहा है।**

अतः सामाजिक पुनर्निर्माण की दृष्टि से शिक्षक की योग्यताएँ, उसके व्यक्तिगत गुण, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति महत्वपूर्ण तत्व है। यूनेस्को (UNESCO) के अनुसार, "शिक्षक को शिक्षा के लिए 4 बातों पर अधिक जोर देने का सुझाव दिया है।"

1. ज्ञार्नाजन के लिए अधिगम (Learning to Know)
2. कार्य के लिए अधिगम (Learning to do)
3. जीने के लिए अधिगम (Learning to Live)
4. आत्मानुभूति के लिए अधिगम (Learning to Self Actualization)

इसी संदर्भ में शिक्षक के बिना शिक्षा की कल्पना करना व्यर्थ है। शिक्षक की व्यक्तिगत विशेषताएँ, शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं भावात्मक योग्यताऐं, शिक्षकीय गुण एवं अनुसंधान ही शिक्षा को गति प्रदान करते हैं और उसका हस्तान्तरण आने वाली पीढ़ी में करते हैं। इसी कारण से शिक्षक की भूमिका, कार्य एवं दायित्व वैश्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाते हैं। हुँमायु कबीर के शब्दों में, **"शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के निर्णायक हैं।"**

वैश्विक दृष्टि से आज ज्ञान के विस्फोटों (Explosion of Knowledge) का युग है। निरन्तर विषय, प्रत्येक क्षेत्र में नये ज्ञान की अभिवृद्धि हो रही है। आज कम्प्यूटर, इंटरनेट, पत्र–पत्रिकाओं, शोध ग्रंथों, अन्य प्रकार के जनसंचार के माध्यम से बहुत प्रभावी और सुलभ है। प्रत्येक प्रसंग (Topic) पर ज्ञानप्रति तीन वर्षों में दुगना हो जाता है। अतः पुराने ज्ञान को ही पढ़ाने रटाने के बजाय शिक्षकों को अपने विषय से सम्बन्धित आधुनिकतम जानकारी एकत्रित करते रहना चाहिए और उसको अपने विद्यार्थियों में बांट देना चाहिए। आधुनिक समय में विषय का शिक्षण प्रभावी (Teacher Dominateds) न होकर विद्यार्थी द्वारा निर्देशित और अर्जिन (Student Directed) होना चाहिए। शिक्षक के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समर्थन में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने कहा है कि, **"राष्ट्र के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है।"**

समीक्षा उपसंहारः–

उपरोक्त के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि भारतीय समाज में वर्तमान समय में एक ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है जो कि कर्म प्रधान वाद् को मानने वाला और बिना किसी भेदभाव के सर्व धर्म सम्भाव की भावना से ओत–प्रोत हो, जिसका धर्म केवल मानवता की रक्षा करना तथा उसमें नैतिकता के बीजारोपण का कार्य निरन्तर करता रहे, जिससे समाज के हर क्षेत्र में गुणवत्ता बनी रहे। विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। पर्सीनन के अनुसार, **"जैसा अध्यापक होगा वैसा ही विद्यालय और समाज बना रहेगा।"**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. राधाकृष्णन, एस०एन०– "आईडिया लिस्ट व्यू ऑफ लाईफ", रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन, कमीशन (1964–66)
2. गुप्ता, एन०एल०– "साताण्डी में मानवीय मूल्य", अमूल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जुलाई 2006
3. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम उपरेखा–2004, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., अरबिंद मार्ग, दिल्ली, मई 2006
4. शिक्षा विभाग, राजस्थान : शिविरा पत्रिका, मई–जून, 2006
5. सक्सैना, एन०आर० स्वरूप एवं पाण्डेय, डॉ० के०पी०– "शिक्षा दर्शन" तथा महान शिक्षा शास्त्री, ANISO: 9001-2008, 2011, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ
6. लाल, प्रो० रमन बिहारी एवं सब्बरवाल, नीरू– "शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य", (ANISO: 9001-2008), 2013, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ
7. जोशी, दिनेश चन्द एवं मेहता चतर सिंह– "शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत और समस्याएँ", 2013, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर–302004
8. Wadhawa, R.– "Teacher Commitment", New Delhi, NCERT, 2003.
9. NCTE: Curriculum Framework for Quality Teacher Education, 2005.
10. NCTE: Report on Evaluation for Quality Secondary Teacher Education, 2005.
11. A Selvan, Paul Devansan (2012): Utilization of Online Programme by Teacher in Teaching Learning a Secondary Level, Edutracks, Vol. 12, November 2012.
12. One Weak Faculty Development Programme/Workshop in Meerut College, Meerut from December, 27 to January, 2018.